HINDI FILE

SIX SIGMA IAS
Dream | Dare | Deliver

DREAM FOR NATION | **DARE** TO SERVE | **DELIVER** WITH INTEGRITY

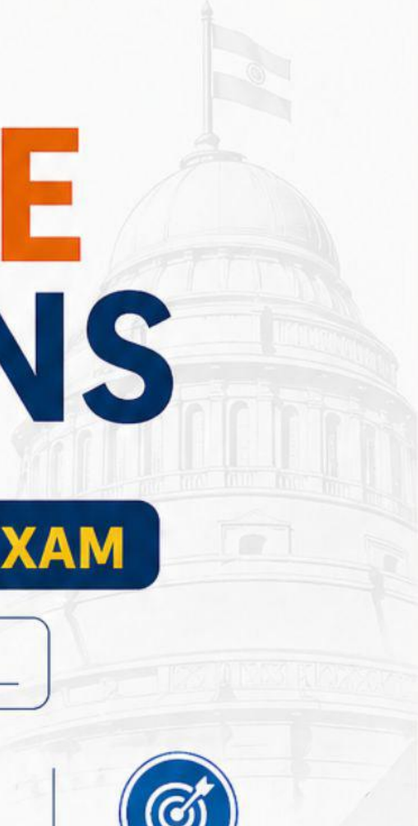

DAILY PRACTICE QUESTIONS

BEST FOR UPSC | UP PCS EXAM

DATE : JULY 8, 2026

Comprehensive Coverage | Exam-Focused Analysis | Concept Clarity & Insights | Practice MCQs with Explanation | Daily Updates, Better Results

CONTACT INFO:
+91 92896 33341 | +91 96679 33341

EMAIL ID:
info@sixsigmaias.com

WEB PAGE:
www.sixsigmaias.com

ADDRESS:
C-6, GROUND FLOOR, SECTOR 2,
NEAR SECTOR 15 METRO STATION, NOIDA – 201301, UTTAR PRADESH

दैनिक अभ्यास प्रश्न - स्थैतिक भाग से

प्रश्न 1. भारतीय राष्ट्रवाद के प्रारंभिक चरण के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. प्रारंभिक राष्ट्रवादियों द्वारा अपनाई गई संवैधानिक पद्धतियां इस धारणा पर आधारित थीं कि ब्रिटिश जनमत भारत में औपनिवेशिक नीति को प्रभावित कर सकता है।
2. प्रारंभिक राष्ट्रवादियों द्वारा आगे बढ़ाए गए आर्थिक दृष्टिकोण (आलोचना) में बड़े औपनिवेशिक आर्थिक ढांचे पर सवाल उठाए बिना केवल उच्च भू-राजस्व को रेखांकित किया गया था।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

(a) केवल एक

(b) दोनों कथन

(c) दोनों में से कोई भी कथन नहीं

(d) दी गई जानकारी से निर्धारित नहीं किया जा सकता

उत्तर: (a)

व्याख्या (Explanation):

- **कथन 1 सही है:** प्रारंभिक राष्ट्रवादी नेताओं का मानना था कि तर्कसंगत याचिकाओं, विधायी सुधारों, सार्वजनिक सभाओं और ब्रिटेन में उदारवादी जनमत की अपीलों के माध्यम से धीरे-धीरे संवैधानिक सुधार हासिल किए जा सकते हैं।
- **कथन 2 गलत है:** उनकी आर्थिक आलोचना भू-राजस्व की तुलना में बहुत अधिक व्यापक थी। 'धन के निष्कासन के सिद्धांत' (Drain Theory), मुक्त व्यापार नीतियों की आलोचना, सैन्य व्यय और भेदभावपूर्ण प्रशासन के माध्यम से उन्होंने औपनिवेशिक शोषण के पूरे ढांचे को चुनौती दी थी।
- **यूपीएससी प्रासंगिकता:** यूपीएससी अक्सर यह परीक्षण करता है कि उम्मीदवार विशिष्ट शिकायतों और उपनिवेशवाद की संरचनात्मक आलोचनाओं के बीच अंतर कर पाते हैं या नहीं।

प्रश्न 2. निम्नलिखित में से कौन सी पारिस्थितिक प्रक्रिया मुख्य रूप से एक वन पारिस्थितिकी तंत्र को निरंतर बायोमास (जैवभार) उत्पादन के बावजूद दीर्घकालिक पोषक तत्वों की उपलब्धता बनाए रखने में सक्षम बनाती है?

(a) जैविक आवर्धन (Biological magnification)

(b) अपघटकों के माध्यम से पोषक तत्व चक्रण (Nutrient cycling through decomposers)

(c) तापीय स्तरीकरण (Thermal stratification)

(d) स्पर्धी अपवर्जन (Competitive exclusion)

उत्तर: (b)

व्याख्या (Explanation):

- वन पारिस्थितिकी तंत्र इसलिए उत्पादक बने रहते हैं क्योंकि अपघटक (डीकंपोजर्स) मृत कार्बनिक पदार्थों को लगातार खनिज पोषक तत्वों में बदलते रहते हैं, जिनका पौधों द्वारा पुन: उपयोग किया जाता है।
- **जैविक आवर्धन** का तात्पर्य खाद्य श्रृंखलाओं में विषाक्त पदार्थों की बढ़ती सांद्रता से है।
- **तापीय स्तरीकरण** मुख्य रूप से झीलों से संबंधित है।
- **स्पर्धी अपवर्जन** पोषक तत्वों की पूर्ति के बजाय प्रजातियों के बीच प्रतिस्पर्धा से संबंधित है।

प्रश्न 3. राष्ट्रीय आय के मापन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. अंतिम वस्तुओं में पहले से शामिल मूल्य की दोहरी गणना से बचने के लिए मुख्य रूप से सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के अनुमान से मध्यवर्ती वस्तुओं को बाहर रखा जाता है।
2. सरकार द्वारा किए गए स्थानांतरण भुगतान (Transfer payments) राष्ट्रीय आय को बढ़ाते हैं क्योंकि वे घरेलू क्रय शक्ति को बढ़ाते हैं।
3. मूल्य-वर्धित विधि (Value-added method) और अंतिम व्यय विधि (Final expenditure method) से सैद्धांतिक रूप से समान सकल घरेलू उत्पाद (GDP) प्राप्त होना चाहिए, बशर्ते कि सांख्यिकीय विसंगतियां अनुपस्थित हों।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

(a) केवल एक

(b) केवल दो

(c) सभी तीन

(d) कोई नहीं

उत्तर: (b)

व्याख्या (Explanation):

- **कथन 1 सही है:** मध्यवर्ती वस्तुओं (इंटरमीडिएट गुड्स) को बाहर रखा जाता है क्योंकि उनका मूल्य पहले से ही अंतिम वस्तुओं में शामिल होता है।
- **कथन 2 गलत है:** स्थानांतरण भुगतान (जैसे पेंशन या छात्रवृत्ति) वर्तमान उत्पादन के लिए भुगतान का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं और इसलिए इन्हें राष्ट्रीय आय में शामिल नहीं किया जाता है।
- **कथन 3 सही है:** सैद्धांतिक रूप से, यदि मापन की त्रुटियां अनुपस्थित हों, तो व्यय, आय और मूल्य-वर्धित विधियों से समान जीडीपी अनुमान प्राप्त होने चाहिए।
- **यूपीएससी प्रासंगिकता:** यूपीएससी राष्ट्रीय आय लेखांकन में गणितीय गणना के बजाय अक्सर वैचारिक समझ का परीक्षण करता है।

प्रश्न 4. भारतीय संवैधानिक व्यवस्था के कामकाज के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. संवैधानिक सर्वोच्चता का तात्पर्य है कि राज्य का प्रत्येक अंग संविधान से अपनी शक्ति प्राप्त करता है।
2. न्यायिक समीक्षा न्यायालयों को उन कानूनों को अमान्य करने की अनुमति देती है जो संवैधानिक प्रावधानों से असंगत हैं।
3. भारत में संसदीय संप्रभुता बिल्कुल वैसी ही है जैसी यूनाइटेड किंगडम (U.K.) में प्रचलित है।
4. संविधान एक ऐसी व्यवस्था की परिकल्पना करता है जिसमें विभिन्न अंगों की शक्तियाँ कार्यात्मक रूप से अलग-अलग हैं, हालांकि वे पूर्ण रूप से विभाजित नहीं हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

(a) केवल एक

(b) केवल दो

(c) केवल तीन

(d) सभी चार

उत्तर: (c)

व्याख्या (Explanation):

- **कथन 1 सही है:** संविधान ही सर्वोच्च कानूनी प्राधिकरण है।
- **कथन 2 सही है:** न्यायिक समीक्षा संवैधानिक न्यायालयों को असंवैधानिक कानूनों और कार्यकारी कार्यों को रद्द करने में सक्षम बनाती है।
- **कथन 3 गलत है:** भारत संवैधानिक सर्वोच्चता का पालन करता है, न कि यूके की तरह पूर्ण संसदीय संप्रभुता का।
- **कथन 4 सही है:** भारत एक सख्त पृथक्करण के बजाय नियंत्रण और संतुलन (चेक्स एंड बैलेंसेस) के साथ शक्तियों के कार्यात्मक पृथक्करण का पालन करता है।
- **यूपीएससी प्रासंगिकता:** यूपीएससी अक्सर भारतीय संवैधानिक मॉडल और ब्रिटिश मॉडल के बीच अंतर करने वाले प्रश्न तैयार करता है।

प्रश्न 5. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन (Assertion - A): बड़े पैमाने पर वायुमंडलीय परिसंचरण वैश्विक वर्षा के वितरण को निर्धारित करने में निर्णायक भूमिका निभाता है।

कारण I (Reason I): पृथ्वी की सतह का असमान रूप से गर्म होना वायुदाब पेटियों और सनातनी पवन प्रणालियों को उत्पन्न करता है जो अक्षांशों के पार नमी का परिवहन करती हैं।

कारण II (Reason II): प्रचलित पवन प्रणालियों पर ध्यान दिए बिना केवल महासागरीय धाराएं ही वैश्विक वर्षण के स्थानिक वितरण को निर्धारित करती हैं।

(a) कथन सही है, कारण I सही है, कारण II गलत है।

(b) कथन सही है, कारण I गलत है, कारण II सही है।

(c) कथन गलत है, कारण I सही है, कारण II गलत है।

(d) कथन, कारण I और कारण II सभी सही हैं।

उत्तर: (a)

व्याख्या (Explanation):

- **कथन (Assertion) सही है:** वैश्विक वर्षा के पैटर्न मौलिक रूप से वायुमंडलीय परिसंचरण, वायुदाब पेटियों और प्रचलित हवाओं से जुड़े हुए हैं।
- **कारण I (Reason I) सही है:** असमान सौर तापन वायुदाब प्रवणता (प्रेशर ग्रेडिएंट्स) स्थापित करता है जो व्यापारिक पवनें, पछुआ पवनें और नमी के परिवहन के लिए जिम्मेदार अन्य परिसंचरण प्रणालियाँ उत्पन्न करता है।
- **कारण II (Reason II) गलत है:** महासागरीय धाराएँ तापमान और आर्द्रता को प्रभावित करती हैं लेकिन स्वतंत्र रूप से वैश्विक वर्षा के पैटर्न को निर्धारित नहीं कर सकती हैं। उनके प्रभाव वायुमंडलीय परिसंचरण, स्थलाकृति (टोपोग्राफी) और नमी युक्त हवाओं के संयोजन में काम करते हैं।
- **यूपीएससी प्रासंगिकता:** यह प्रश्न प्राथमिक जलवायु नियंत्रणों और द्वितीयक संशोधक कारकों के बीच यूपीएससी-पसंदीदा अंतर का परीक्षण करता है।

दैनिक अभ्यास प्रश्न – करंट अफेयर्स अनुभाग से

प्रश्न 1. 'प्रोजेक्ट निम्बस' (Project Nimbus) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. प्रोजेक्ट निम्बस एक क्लाउड कंप्यूटिंग कार्यक्रम है जिसके तहत महत्वपूर्ण सरकारी वर्कलोड विशेष रूप से भाग लेने वाले देश के भीतर भौतिक रूप से स्थित संप्रभु डेटा केंद्रों (Sovereign Data Centres) पर होस्ट किए जाते हैं।

2. प्रोजेक्ट निम्बस को लेकर उठाई गई चिंताओं में यह संभावना शामिल है कि उन्नत क्लाउड बुनियादी ढांचा दोहरे उपयोग वाली कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) प्रौद्योगिकियों के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप से सैन्य या निगरानी क्षमताओं को बढ़ा सकता है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

(a) केवल एक

(b) दोनों कथन

(c) दोनों में से कोई भी कथन नहीं

(d) दी गई जानकारी से निर्धारित नहीं किया जा सकता

उत्तर: (a)

व्याख्या (Explanation):

- **कथन 1 गलत है:** प्रोजेक्ट निम्बस एक क्लाउड सेवा अनुबंध (कॉन्ट्रैक्ट) है जिसमें उन्नत क्लाउड कंप्यूटिंग और एआई (AI) बुनियादी ढांचा शामिल है। यह विशेष रूप से संप्रभु डेटा केंद्रों के इर्द-गिर्द डिज़ाइन नहीं किया गया है, और न ही ऐसी विशिष्टता इस परियोजना की कोई अनिवार्य विशेषता है।
- **कथन 2 सही है:** प्रोजेक्ट निम्बस के इर्द-गिर्द होने वाली प्रमुख बहसों में से एक क्लाउड कंप्यूटिंग और एआई की दोहरे उपयोग (डुअल-यूज़) वाली प्रकृति से संबंधित है, जहां नागरिक बुनियादी ढांचा संभावित रूप से रक्षा, खुफिया या निगरानी अनुप्रयोगों का समर्थन कर सकता है।
- **यूपीएससी प्रासंगिकता:** यूपीएससी अक्सर किसी परियोजना की तकनीकी विशेषताओं और उससे जुड़ी नीतिगत बहसों के बीच अंतर का परीक्षण करता है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित में से कौन सा एक विकल्प सबसे अच्छी व्याख्या करता है कि 'बायोचार' (Biochar) को तेजी से एक महत्वपूर्ण जलवायु शमन (Mitigation) उपकरण क्यों माना जा रहा है?

(a) यह वायुमंडलीय नाइट्रोजन को सीधे पौधों के पोषक तत्वों में परिवर्तित करता है।

(b) यह मिट्टी के कुछ गुणों में सुधार करते हुए मिट्टी में अपेक्षाकृत स्थिर कार्बन को संग्रहीत करता है।

(c) यह कार्बनिक पदार्थों के अपघटन को तेज करता है, जिससे पोषक तत्वों का चक्रण बढ़ता है।

(d) यह कृषि उत्पादकता को प्रभावित किए बिना सभी रासायनिक उर्वरकों को प्रतिस्थापित करता है।

उत्तर: (b)

व्याख्या (Explanation):

- बायोचार का उत्पादन सीमित ऑक्सीजन की स्थिति में बायोमास (जैवभार) के पायरोलिसिस (Pyrolysis/ताप-अपघटन) के माध्यम से किया जाता है।
- इसमें अत्यधिक स्थिर कार्बन होता है जो दशकों या सदियों तक मिट्टी में रह सकता है, जिससे यह कार्बन अनुकूर्तन (Carbon Sequestration/कार्बन को सोखकर रखने) के तंत्र के रूप में कार्य करता है।

- यह मिट्टी की संरचना, नमी धारण करने की क्षमता और माइक्रोबियल (सूक्ष्मजीव) गतिविधि में सुधार कर सकता है।
- यह वायुमंडलीय नाइट्रोजन को स्थिर (फिक्स) नहीं करता है और न ही रासायनिक उर्वरकों को पूरी तरह से प्रतिस्थापित करता है।

प्रश्न 3. आईएनएस दुनागिरी (INS Dunagiri), आईएनएस संशोधक (INS Sanshodhak) और आईएनएस अग्रय (INS Agray) के त्रि-कमीशनिंग (Tri-Commissioning) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह आयोजन नौसेना में युद्धक (कॉम्बैट) के साथ-साथ विशेषज्ञ सहायता प्लेटफार्मों को एक साथ शामिल करने पर भारत के बढ़ते जोर को दर्शाता है।
2. आईएनएस संशोधक को मुख्य रूप से हाइड्रोग्राफिक सर्वेक्षण और समुद्र विज्ञान संबंधी डेटा के संग्रह के लिए डिज़ाइन किया गया है।
3. आईएनएस अग्रय पनडुब्बी रोधी युद्धक (Anti-submarine Warfare) स्टील्थ फ्रिगेट की श्रेणी से संबंधित है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

(a) केवल एक

(b) केवल दो

(c) सभी तीन

(d) कोई नहीं

उत्तर: (b)

व्याख्या (Explanation):

- **कथन 1 सही है:** त्रि-कमीशनिंग ने युद्धक क्षमता और समुद्री सहायता बुनियादी ढांचे दोनों को एक साथ मजबूत करने के भारत के प्रयास को उजागर किया।
- **कथन 2 सही है:** आईएनएस संशोधक एक 'सर्वे वेसल लार्ज' (Survey Vessel Large) है जिसका उद्देश्य हाइड्रोग्राफिक सर्वेक्षण, नौवहन चार्टिंग और समुद्र विज्ञान संबंधी अध्ययन करना है।
- **कथन 3 गलत है:** आईएनएस अग्रय एक एंटी-सबमरीन वारफेयर स्टील्थ फ्रिगेट नहीं है। यह यार्ड 3025-क्लास डाइविंग सपोर्ट वेसल (DSV) श्रेणी से संबंधित है, जिसका उद्देश्य गहरे समुद्र में गोताखोरी और पनडुब्बी बचाव कार्यों का समर्थन करना है।
- **यूपीएससी प्रासंगिकता:** यूपीएससी अक्सर यह परीक्षण करता है कि उम्मीदवार युद्धक प्लेटफार्मों (Combat Platforms) और सहायक नौसैनिक जहाजों (Auxiliary Vessels) के बीच अंतर कर पाते हैं या नहीं।

प्रश्न 4. एपीडा (APEDA) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. एपीडा (APEDA) संसद के एक अधिनियम के माध्यम से स्थापित एक वैधानिक निकाय (Statutory Body) है।
2. एपीडा वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के तहत कार्य करता है।
3. एपीडा भारत से निर्यात की जाने वाली कृषि वस्तुओं के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) को नियंत्रित करता है।
4. एपीडा गुणवत्ता प्रमाणन, बुनियादी ढांचे और बाजार विकास की सुविधा प्रदान करके अनुसूचित कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पादों के निर्यात को बढ़ावा देता है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

(a) केवल एक

(b) केवल दो

(c) केवल तीन

(d) सभी चार

उत्तर: (c)

व्याख्या (Explanation):

- **कथन 1 सही है:** एपीडा की स्थापना एपीडा अधिनियम, 1985 (APEDA Act, 1985) के तहत की गई थी।
- **कथन 2 सही है:** यह वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के तहत कार्य करता है।
- **कथन 3 गलत है:** एमएसपी (MSP) का निर्धारण कृषि लागत और मूल्य आयोग (CACP) की सिफारिशों के आधार पर सरकार द्वारा किया जाता है; एमएसपी तय करने में एपीडा की कोई भूमिका नहीं है।
- **कथन 4 सही है:** एपीडा गुणवत्ता मानकों, पता लगाने की क्षमता (ट्रेसेबिलिटी), प्रमाणन, ब्रांडिंग, बाजार पहुंच और निर्यात बुनियादी ढांचे के माध्यम से निर्यात को बढ़ावा देता है।
- **यूपीएससी प्रासंगिकता:** यूपीएससी आमतौर पर निर्यात संवर्धन एजेंसियों और मूल्य-विनियमन करने वाली एजेंसियों के बीच अंतर पूछता है।

प्रश्न 5. अमोनिया गैस और फाइबर-ऑप्टिक ड्रोन के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. निर्जल अमोनिया (Anhydrous ammonia) का इसकी उच्च वाष्पीकरण की गुप्त ऊष्मा (Latent heat of vaporization) के कारण औद्योगिक प्रशीतक (Refrigerant) के रूप में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।
2. अमोनिया हवा से हल्की होती है और इसलिए सभी वायुमंडलीय स्थितियों में रिसाव के बाद तेजी से जमीन के करीब बैठ जाती है।
3. फाइबर-ऑप्टिक ड्रोन पारंपरिक रेडियो-फ्रीक्वेंसी जैमिंग के प्रति प्रतिरोधी होते हैं क्योंकि इनमें संचार एक भौतिक फाइबर-ऑप्टिक केबल के माध्यम से होता है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

(a) केवल एक

(b) केवल दो

(c) सभी तीन

(d) कोई नहीं

उत्तर: (b)

व्याख्या (Explanation):

- **कथन 1 सही है:** अमोनिया के उत्कृष्ट थर्मोडायनामिक गुणों के कारण इसे औद्योगिक प्रशीतक (इंडस्ट्रियल रेफ्रिजरेंट) के रूप में बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाता है।
- **कथन 2 गलत है:** हालांकि अमोनिया शुरुआत में हवा से हल्की होती है, लेकिन बड़े रिसाव के दौरान यह तापमान, आर्द्रता और एरोसोल निर्माण के आधार पर अलग व्यवहार कर सकती है। यह सभी स्थितियों में अनिवार्य रूप से एक ही निश्चित तरीके से बैठ या बिखर नहीं जाती है।
- **कथन 3 सही है:** फाइबर-ऑप्टिक ड्रोन एक भौतिक ऑप्टिकल फाइबर के माध्यम से संचार करते हैं, जिससे वे पारंपरिक इलेक्ट्रॉनिक जैमिंग और कई इलेक्ट्रॉनिक युद्ध उपायों से पूरी तरह सुरक्षित हो जाते हैं।
- **यूपीएससी प्रासंगिकता:** यूपीएससी अक्सर "सभी वायुमंडलीय स्थितियों में" जैसे पूर्ण या आत्यंतिक (Absolute) अभिव्यक्तियों का परिचय देता है, जो आमतौर पर बयानों को गलत बना देते हैं।

प्रश्न 6. पश्चिमी घाट के संबंध में निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए:

संरक्षित क्षेत्र (Protected Area)	**राज्य (State)**
1. साइलेंट वैली राष्ट्रीय उद्यान	केरल
2. कुद्रेमुख राष्ट्रीय उद्यान	कर्नाटक
3. अनामलाई टाइगर रिजर्व	तमिलनाडु
4. मोल्लेम राष्ट्रीय उद्यान	महाराष्ट्र

उपर्युक्त युग्मों में से कितने सही सुमेलित हैं?

(a) केवल एक

(b) केवल दो

(c) केवल तीन

(d) सभी चार

उत्तर: (c)

व्याख्या (Explanation):

- **युग्म 1 - सही:** साइलेंट वैली राष्ट्रीय उद्यान केरल में स्थित है।
- **युग्म 2 - सही:** कुद्रेमुख राष्ट्रीय उद्यान कर्नाटक में स्थित है।
- **युग्म 3 - सही:** अनामलाई टाइगर रिजर्व (पूर्व में इंदिरा गांधी वन्यजीव अभयारण्य) तमिलनाडु में स्थित है।
- **युग्म 4 - गलत:** मोल्लेम राष्ट्रीय उद्यान गोवा में स्थित है, महाराष्ट्र में नहीं।

दैनिक अभ्यास हेतु विषय आधारित प्रश्न

सामान्य अध्ययन – I (इतिहास)

प्रश्न 1. मध्यकालीन भारत के सामाजिक-धार्मिक ताने-बाने को बदलने में भक्ति आंदोलन की भूमिका की चर्चा कीजिए। इसने मौजूदा सामाजिक व्यवस्था को किस हद तक चुनौती दी?

आदर्श उत्तर (Sample Answer)

भक्ति आंदोलन 7वीं और 17th शताब्दियों के बीच भारतीय इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों में से एक के रूप में उभरा। दक्षिण भारत से शुरू होकर और बाद में पूरे उपमहाद्वीप में फैलकर, इसने कर्मकांडीय पूजा के बजाय एक व्यक्तिगत देवता के प्रति निष्ठा (भक्ति) पर जोर दिया। कबीर, गुरु नानक, मीराबाई, तुलसीदास, चैतन्य महाप्रभु, बसवन्ना और नामदेव जैसे संतों ने इस आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। प्रकृति में धार्मिक होने के बावजूद, इसका प्रभाव समाज, संस्कृति, साहित्य और राजनीति तक फैला हुआ था।

भक्ति आंदोलन ने तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था को कई तरीकों से चुनौती दी:

- **जातिगत पदानुक्रम पर प्रहार:** इसने जन्म के विचार को दरकिनार कर यह प्रतिपादित किया कि भक्ति का मार्ग बिना किसी भेदभाव के सभी के लिए खुला है। कबीर जैसे संतों ने जातिगत भेदभाव, कर्मकांडों और पुरोहिती प्रभुत्व की खुलकर आलोचना की और तर्क दिया कि आध्यात्मिक प्राप्ति सामाजिक स्थिति के बजाय व्यक्तिगत भक्ति पर निर्भर करती है।
- **समानता और भाईचारा:** गुरु नानक ने समानता, ईमानदार जीवन और सार्वभौमिक भाईचारे पर जोर दिया, जिससे सामूहिक पूजा (संगत) और सेवा (लंगर) पर आधारित समुदाय की नींव पड़ी।
- **धार्मिक सद्भाव को बढ़ावा:** कई भक्ति संतों ने सांप्रदायिक विभाजनों को खारिज कर दिया और ईश्वर की आवश्यक एकता पर बल दिया। उनकी शिक्षाओं ने हिंदू और इस्लामी आध्यात्मिक परंपराओं के बीच एक सेतु

का निर्माण किया, जो विशेष रूप से सूफी विचारों के प्रभाव से संभव हुआ। इसने कई क्षेत्रों में सामाजिक तनाव को कम किया और सांस्कृतिक संश्लेषण (सांस्कृतिक समन्वय) को बढ़ावा दिया।

- **महिला सशक्तिकरण:** महिलाओं को इस आंदोलन के माध्यम से व्यापक आध्यात्मिक अभिव्यक्ति मिली। मीराबाई जैसी संतों ने स्वतंत्र भक्ति जीवन अपनाकर और स्थानीय भाषा में कविताएँ रचकर पितृसत्तात्मक मानदंडों को चुनौती दी, जिसने परोक्ष रूप से मध्यकालीन समाज में प्रचलित लैंगिक प्रतिबंधों पर सवाल खड़े किए।
- **लोकभाषाओं का विकास:** एक अन्य महत्वपूर्ण योगदान संस्कृत के स्थान पर क्षेत्रीय भाषाओं का उपयोग था। हिंदी, मराठी, कन्नड़, तमिल, बंगाली और अन्य लोकभाषाओं (vernacular languages) में भक्ति साहित्य की रचना ने साक्षरता का विस्तार किया और क्षेत्रीय साहित्यिक परंपराओं को मजबूत किया।

सीमाएँ:

हालांकि, इस आंदोलन की कुछ सीमाएँ भी थीं। यद्यपि इसने जातिगत भेदभाव पर सवाल उठाए, लेकिन यह जाति-आधारित सामाजिक प्रथाओं को पूरी तरह से समाप्त नहीं कर सका। कई क्षेत्रों में, भक्ति की समानतावादी सोच के बावजूद सामाजिक असमानताएँ बनी रहीं। इसके अलावा, कई भक्ति परंपराएँ समय के साथ खुद संस्थागत (institutionalized) हो गईं, जिससे उनका मूल सुधारवादी चरित्र कमजोर हो गया।

निष्कर्ष

कुल मिलाकर, भक्ति आंदोलन रूढ़िवादी परंपराओं के लिए एक महत्वपूर्ण नैतिक और सामाजिक चुनौती था। समानता, भक्ति, लोक संस्कृति और आध्यात्मिक लोकतंत्र पर जोर देकर, इसने बाद के सामाजिक सुधार आंदोलनों की नींव रखी और भारत की साझी (मिश्रित) सांस्कृतिक विरासत में अमूल्य योगदान दिया।

सामान्य अध्ययन – II (राजव्यवस्था और शासन)

प्रश्न 2. भारत में कार्यपालिका की संवैधानिक स्थिति का परीक्षण कीजिए। चर्चा कीजिए कि सामूहिक उत्तरदायित्व का सिद्धांत लोकतांत्रिक जवाबदेही को कैसे सुनिश्चित करता है।

आदर्श उत्तर (Sample Answer)

भारत का संविधान एक संसदीय कार्यपालिका की स्थापना करता है जिसमें राष्ट्रपति संवैधानिक प्रमुख होता है जबकि प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में मंत्रिपरिषद वास्तविक कार्यकारी शक्ति का प्रयोग करती है। यह व्यवस्था सुनिश्चित करती है कि कार्यकारी शक्ति जनता के निर्वाचित प्रतिनिधियों के प्रति जवाबदेह बनी रहे।

राष्ट्रपति मंत्रिपरिषद की सहायता और सलाह (aid and advice) पर अपनी शक्तियों का प्रयोग करता है, केवल कुछ सीमित स्थितियों को छोड़कर जहां संवैधानिक विवेक (discretion) मौजूद है। प्रधानमंत्री मंत्रियों का चयन करके, नीति का समन्वय करके और सरकार के भीतर सामंजस्य बनाए रखकर कार्यपालिका में केंद्रीय स्थान रखता है।

संसदीय कार्यपालिका की एक परिभाषित विशेषता **सामूहिक उत्तरदायित्व (Collective Responsibility) का सिद्धांत** है। **अनुच्छेद 75(3)** के तहत, मंत्रिपरिषद सामूहिक रूप से लोकसभा के प्रति उत्तरदायी होती है। इसका

तात्पर्य यह है कि सभी मंत्री व्यक्तिगत विचारों से परे जाकर कैबिनेट के निर्णयों का सार्वजनिक रूप से समर्थन करते हैं। यदि सरकार लोकसभा का विश्वास खो देती है, तो पूरी मंत्रिपरिषद को इस्तीफा देना पड़ता है।

सामूहिक उत्तरदायित्व निम्नलिखित तरीकों से लोकतांत्रिक जवाबदेही को बढ़ावा देता है:

- **संसद के प्रति जवाबदेही:** यह सुनिश्चित करता है कि कार्यपालिका चर्चाओं, प्रश्नकाल, प्रस्तावों और समिति जांच के माध्यम से संसद के प्रति जवाबदेह बनी रहे।
- **एकीकृत निर्णय प्रक्रिया:** यह कार्यपालिका के भीतर विखंडन को रोकता है और सुसंगत व एकीकृत निर्णय लेने को प्रोत्साहित करता है।
- **राजनीतिक जवाबदेही:** यह राजनीतिक जिम्मेदारी को मजबूत करता है क्योंकि मतदाता चुनावों के दौरान सत्तारूढ़ सरकार को सामूहिक रूप से जवाबदेह ठहरा सकते हैं।

व्यावहारिक चुनौतियाँ:

हाल के समय में कुछ व्यावहारिक चुनौतियाँ भी उभरी हैं। प्रधानमंत्री कार्यालय (PMO) में निर्णय लेने का बढ़ता केंद्रीकरण, दल-बदल विरोधी कानून (जिससे विधायी स्वतंत्रता सीमित होती है), गठबंधन की राजनीति और संसद में व्यवधान कभी-कभी प्रभावी जवाबदेही को कमजोर करते हैं। अध्यादेशों (Ordinances) और प्रत्यायोजित विधान (Delegated legislation) के बार-बार उपयोग ने भी कार्यपालिका के बढ़ते दबदबे पर बहस छेड़ दी है।

संसदीय नियंत्रण से परे कार्यपालिका की जवाबदेही को सुदृढ़ करने में न्यायिक समीक्षा, संसदीय समितियां, नियंत्रक और महालेखा परीक्षक (CAG), चुनाव आयोग, सूचना का अधिकार (RTI) ढांचा और एक सक्रिय मीडिया जैसे संस्थागत तंत्र निरंतर अपनी भूमिका निभा रहे हैं।

निष्कर्ष

भारत की संसदीय कार्यपालिका राजनीतिक स्थिरता के साथ लोकतांत्रिक जिम्मेदारी का समन्वय करती है। सामूहिक उत्तरदायित्व का सिद्धांत मनमाने कार्यकारी कार्यों के खिलाफ संविधान के सबसे प्रभावी सुरक्षा उपायों में से एक बना हुआ है। संसदीय कामकाज, समिति निरीक्षण और पारदर्शिता को मजबूत करने से लोकतांत्रिक शासन और गहरा होगा।

सामान्य अध्ययन – III (अर्थव्यवस्था)

प्रश्न 3. "सरकारी बजट केवल एक लेखा विवरण (accounting statement) नहीं है बल्कि आर्थिक प्रबंधन का एक उपकरण है।" चर्चा कीजिए।

आदर्श उत्तर (Sample Answer)

सरकारी बजट एक वार्षिक वित्तीय विवरण होता है जो अनुमानित प्राप्तियों और व्ययों को दर्शाता है। लेखांकन (accounting) से परे, यह विकास, मुद्रास्फीति, रोजगार, आय वितरण और राजकोषीय स्थिरता को प्रभावित करने वाले एक शक्तिशाली समष्टि आर्थिक (मैक्रोइकॉनॉमिक) नीति उपकरण के रूप में कार्य करता है।

बजट आर्थिक प्रबंधन के उपकरण के रूप में निम्नलिखित भूमिका निभाता है:

- **संसाधनों का आवंटन:** बजट बुनियादी ढांचे, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और डिजिटल कनेक्टिविटी के लिए संसाधन आवंटित करके आर्थिक विकास को बढ़ावा देता है। सार्वजनिक निवेश अक्सर निजी निवेश को भी आकर्षित (crowds in) करता है, विशेष रूप से आर्थिक मंदी के दौर में।
- **स्थिरीकरण की भूमिका (Stabilization Role):** मंदी के दौरान, उच्च सार्वजनिक व्यय और कम करों वाली विस्तारवादी राजकोषीय नीति कुल मांग को प्रोत्साहित करती है। इसके विपरीत, मुद्रास्फीति (महंगाई) के दौर में, राजकोषीय सुदृढ़ीकरण अतिरिक्त मांग को नियंत्रित कर सकता है।
- **पुनर्वितरण और सामाजिक न्याय:** प्रगतिशील कराधान, लक्षित सब्सिडी, सामाजिक सुरक्षा योजनाएं, ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम और खाद्य सुरक्षा पहल असमानता को कम करती हैं तथा मानव विकास के परिणामों में सुधार करती हैं।
- **पूंजीगत व्यय (Capital Expenditure) पर ध्यान:** सड़कों, रेलवे, बंदरगाहों, नवीकरणीय ऊर्जा और रसद (लॉजिस्टिक्स) में निवेश दीर्घकालिक उत्पादक क्षमता का निर्माण करता है और साथ ही रोजगार पैदा करता है। इसके साथ ही, राजकोषीय घाटे का विवेकपूर्ण प्रबंधन व्यापक आर्थिक स्थिरता और निवेशकों का विश्वास सुनिश्चित करता है।

कार्यान्वयन की चुनौतियाँ:

बजट की प्रभावशीलता इसके जमीनी कार्यान्वयन पर निर्भर करती है। राजस्व की कमी, सब्सिडी का बोझ, बढ़ता सार्वजनिक ऋण, बजट-बाह्य उधार (off-budget borrowings), परियोजनाओं के निष्पादन में देरी और बाहरी झटकों से उत्पन्न राजकोषीय दबाव इसके मार्ग की प्रमुख चुनौतियाँ हैं।

हालिया रुझान:

वर्तमान रुझान विकास-उन्मुख व्यय के साथ-साथ राजकोषीय सुदृढ़ीकरण (Fiscal Consolidation) पर जोर देते हैं। डिजिटल सार्वजनिक वित्त प्रणाली, प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (DBT), बेहतर कर अनुपालन और परिणाम-आधारित बजट (Outcome-based budgeting) ने व्यय की दक्षता को बढ़ाया है। बजट को विकास, समानता, स्थिरता और राजकोषीय विवेक जैसे प्रतिस्पर्धी उद्देश्यों के बीच संतुलन बनाना होता है। अत्यधिक घाटा मुद्रास्फीति और ऋण तनाव को बढ़ा सकता है, जबकि अत्यधिक तपस्या (austerity) विकास और रोजगार को दबा सकती है।

निष्कर्ष

सरकारी बजट खातों के विवरण से कहीं अधिक है। यह सरकार के आर्थिक दर्शन और नीतिगत प्राथमिकताओं का प्रतिनिधित्व करता है। प्रभावी राजकोषीय प्रबंधन व्यापक आर्थिक स्थिरता और दीर्घकालिक विकास को बनाए रखते हुए समावेशी विकास को गति दे सकता है।

सामान्य अध्ययन – IV (एथिक्स, सत्यनिष्ठा और अभिरुचि)

प्रश्न 4. लोक प्रशासन में सत्यनिष्ठा (integrity), जवाबदेही (accountability) और पारदर्शिता (transparency) के बीच संबंध स्पष्ट कीजिए। सुशासन के लिए ये मूल्य क्यों अपरिहार्य हैं?

आदर्श उत्तर (Sample Answer)

सत्यनिष्ठा, जवाबदेही और पारदर्शिता लोकतांत्रिक शासन के मूलभूत नैतिक मूल्य हैं। ये मूल्य मिलकर जनता का विश्वास पैदा करते हैं, संस्थाओं को मजबूत करते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि सार्वजनिक शक्ति का प्रयोग केवल आम जनता के कल्याण के लिए किया जाए।

- **सत्यनिष्ठा (Integrity):** इसका तात्पर्य नैतिक मूल्यों और आधिकारिक आचरण के बीच निरंतरता से है। सत्यनिष्ठा से युक्त लोक सेवक अपने कर्तव्यों का पालन ईमानदारी से करता है, भ्रष्टाचार का विरोध करता है और राजनीतिक या व्यक्तिगत दबाव में भी निष्पक्ष रहता है।
- **जवाबदेही (Accountability):** इसका अर्थ निर्णयों और कार्यों के लिए उत्तरदायी होना है। लोक अधिकारियों को संवैधानिक संस्थाओं, विधानसभाओं, लेखापरीक्षा निकायों, अदालतों और नागरिकों के समक्ष अपने आचरण को न्यायसंगत ठहराना होता है। जवाबदेही सत्ता के मनमाने प्रयोग को रोकती है।
- **पारदर्शिता (Transparency):** यह निर्णय लेने में खुलेपन, सूचना तक पहुंच और सरकारी प्रक्रियाओं में स्पष्टता सुनिश्चित करती है। स्वतः संज्ञान प्रकटीकरण (Proactive disclosure), डिजिटल गवर्नेंस, ई-प्रोक्योरमेंट और सूचना का अधिकार अधिनियम जैसे तंत्र गोपनीयता को कम करते हैं और भ्रष्टाचार के अवसरों को समाप्त करते हैं।

मूल्यों के बीच अंतर्संबंध:

ये मूल्य एक-दूसरे को सुदृढ़ करते हैं। **पारदर्शिता** नागरिकों को सरकारी कार्यों की जांच करने में सक्षम बनाती है। **जवाबदेही** गलत काम होने पर सुधारात्मक कार्रवाई सुनिश्चित करती है। **सत्यनिष्ठा** उस स्थिति में भी नैतिक व्यवहार को प्रेरित करती है जहां बाहरी निगरानी तंत्र कमजोर हो।

सुशासन के लिए अपरिहार्यता:

व्यावहारिक रूप से, नैतिक शासन सेवा वितरण में सुधार करता है, नीतिगत वैधता को बढ़ाता है, नागरिक भागीदारी को मजबूत करता है और निवेशकों का विश्वास जगाता है। यह कल्याणकारी कार्यक्रमों में लीकेज (रिसाव) को भी कम करता है और प्रशासनिक दक्षता में सुधार करता है।

चुनौतियाँ और आगे की राह:

इस मार्ग में राजनीतिक हस्तक्षेप, हितों का टकराव (conflict of interest), नौकरशाही की अपारदर्शिता, विवेकाधीन शक्तियों का दुरुपयोग, कमजोर व्हिसलब्लोअर संरक्षण और भ्रष्टाचार के नेटवर्क जैसी कई चुनौतियाँ बनी हुई हैं। नैतिक शासन को मजबूत करने के लिए नियमित नैतिकता प्रशिक्षण, संस्थागत स्वतंत्रता, ईमानदार अधिकारियों का संरक्षण, प्रौद्योगिकी-सक्षम निगरानी, नागरिक चार्टर, सामाजिक अंकेक्षण (सोशल ऑडिट) और मजबूत सतर्कता तंत्र की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

सत्यनिष्ठा नैतिक आधार प्रदान करती है, पारदर्शिता दृश्यता (visibility) प्रदान करती है और जवाबदेही प्रवर्तनीयता (enforceability) प्रदान करती है। साथ में, वे एक ऐसा शासन ढांचा तैयार करते हैं जो लोकतांत्रिक संस्थानों में न्याय, दक्षता और जनता का विश्वास प्रदान करने में सक्षम है।

समसामयिकी (Current Affairs)

प्रश्न 5. पूर्वोत्तर भारत में संतुलित क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा देने में 'अष्टलक्ष्मी विकास मॉडल' (Ashtalakshmi Growth Model) के महत्व की चर्चा कीजिए। इसके अवसरों और कार्यान्वयन की चुनौतियों पर प्रकाश डालिए।

आदर्श उत्तर (Sample Answer)

अष्टलक्ष्मी विकास मॉडल एक विकास-उन्मुख ढांचा है जो एकीकृत बुनियादी ढांचे, कनेक्टिविटी, उद्यमिता, पर्यटन, कृषि और क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देकर भारत के आठ उत्तर-पूर्वी राज्यों की आर्थिक क्षमता को अनलॉक करना चाहता है। यह नाम समृद्धि के आठ रूपों (अष्टलक्ष्मी) का प्रतीक है और उत्तर-पूर्व को भारतीय अर्थव्यवस्था के एक प्रमुख विकास इंजन में बदलने के दृष्टिकोण को दर्शाता है।

अष्टलक्ष्मी विकास मॉडल के मुख्य स्तंभ और अवसर निम्नलिखित हैं:

- **बहु-साधन (Multimodal) कनेक्टिविटी:** यह मॉडल राजमार्गों, रेलवे, अंतर्देशीय जलमार्गों और हवाई परिवहन के माध्यम से कनेक्टिविटी पर जोर देता है। बेहतर बुनियादी ढांचे से लॉजिस्टिक्स लागत कम होने, बाजार तक पहुंच बढ़ने और 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' के तहत दूरदराज के क्षेत्रों को राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय मूल्य श्रृंखलाओं (वैल्यू चेन्स) के साथ एकीकृत करने की उम्मीद है।
- **कृषि और संबद्ध क्षेत्र:** जैविक खेती (ऑर्गेनिक फार्मिंग), बागवानी, बांस, मसाले, चाय और खाद्य प्रसंस्करण (फूड प्रोसेसिंग) को बढ़ावा देकर किसानों की आय में पर्याप्त वृद्धि की जा सकती है, जिससे निर्यात के नए अवसर पैदा होंगे।
- **पर्यटन क्षमता:** जैव विविधता, संस्कृति और साहसिक (एडवेंचर) गतिविधियों पर आधारित पर्यटन क्षेत्र में रोजगार की व्यापक संभावनाएं मौजूद हैं।
- **जनसांख्यिकी का लाभ:** यह मॉडल क्षेत्र के युवाओं की जनसांख्यिकीय क्षमता का लाभ उठाने के लिए नवाचार, डिजिटल बुनियादी ढांचे, एमएसएमई (MSMEs) और कौशल विकास को प्रोत्साहित करता है। पड़ोसी देशों के साथ बढ़ी हुई कनेक्टिविटी उत्तर-पूर्व को दक्षिण-पूर्व एशिया (Southeast Asia) के लिए भारत के प्रवेश द्वार के रूप में स्थापित कर सकती है।

कार्यान्वयन की चुनौतियाँ:

इन अवसरों के बावजूद, इस मॉडल के कार्यान्वयन को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है:

- **कठिन भौगोलिक भूभाग (Terrain):** दुर्गम इलाका बुनियादी ढांचे के निर्माण की लागत को बढ़ाता है और परियोजनाओं में देरी का कारण बनता है।

SIXSIGMAIAS Dream | Dare | Deliver

- **पारिस्थितिक संवेदनशीलता:** क्षेत्र की नाजुक पर्यावरण स्थिति को देखते हुए पर्यावरण के अनुकूल और टिकाऊ विकास की आवश्यकता है।
- **अन्य सीमाएँ:** भूमि स्वामित्व के पैटर्न, कनेक्टिविटी अंतराल, प्राकृतिक आपदाएँ (जैसे बाढ़ और भूस्खलन) और स्थानीय संस्थानों में क्षमता की कमी भी परियोजना के निष्पादन को प्रभावित करती है। केंद्र सरकार, राज्य सरकारों और स्थानीय समुदायों के बीच निरंतर समन्वय अनिवार्य है।

आगे की राह:

दीर्घकालिक सफलता के लिए, विकास को समावेशी, पर्यावरण के प्रति टिकाऊ और समुदाय-संचालित होना चाहिए। स्थानीय उद्यमियों, महिलाओं, जनजातीय समुदायों और नागरिक समाज की अधिक भागीदारी से स्वामित्व की भावना में सुधार होगा और समान लाभ सुनिश्चित होगा।

निष्कर्ष

अष्टलक्ष्मी विकास मॉडल संतुलित क्षेत्रीय विकास के लिए एक रणनीतिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। यदि इसे पर्याप्त निवेश, पारिस्थितिक सुरक्षा उपायों और मजबूत संस्थागत समन्वय के साथ प्रभावी ढंग से लागू किया जाता है, तो यह उत्तर-पूर्व को राष्ट्रीय एकीकरण को मजबूत करने के साथ-साथ कनेक्टिविटी, व्यापार, पर्यटन और सतत आर्थिक विकास के एक जीवंत केंद्र में बदल सकता है।